सत्य साहित्य

वर्ष 4 / अंक 2
जनवरी 2021
Year 4/ No. 2
January
2021

सत्य साहित्य, श्री रामशरणम् इन्टरनेशनल सेन्टर, नई दिल्ली की एक त्रैमासिक पत्रिका

प्रभु मेरे अवगुण चित न धरो।
समदरसी प्रभु नाम तिहारो
अपने पनहि करो ॥१॥
इक लोहा पूजा में राखत इक
घर वधिक परो।
यह दुबिधा पारस नहिं जानत
कंचन करत खरो ॥२॥
इक नदिया एक नार कहावत,
मैलो नीर भरो।
जब मिलिके दोउ एक बरन भये,
सुरसरि नाम परो ॥३॥
एक जीव इक ब्रह्म कहावत,
सूर स्याम झगरो,
अबकी बेर मोहि पार उतारो,
नहिं पन जात टरो ॥४॥

(परम पूजनीय स्वामी जी महाराज की भजन डायरी से)

इस अंक में पढ़िए

- भजन
- नव वर्ष की बधाई
- भक्त के लक्षण
- श्रीरामशरणम् सिरसा–एक ऐतिहासिक विवरण
- परम पूजनीय स्वामी जी महाराज के हस्त लिखित श्लोक
- अनुभूतियाँ
- विभिन्न केन्द्रों से
- कैलेंडर
- बच्चों के लिए

सत्य साहित्य

मूल्य (Price) ₹5

नव वर्ष 2021 की बधाई !

मधुरतम, आनन्दमय एवं मंगलमय नववर्ष के लिए शुभ कामनाएं।

Best wishes for a sweet, blissful and auspicious New Year.

Characteristics of a Devotee

सत्यानन्द

In the Geeta the man of perfection has been called by different names to depict his qualities. In the second chapter he is described as a man of steady wisdom, in the twelfth a devotee, in the fourteenth as one who has transcended the three gunas and in the sixteenth a man endowed with divine attributes. Those who believe in a Personal God, that is to say, those who superimpose a personality on the Godhead and worship, they attain their goal more quickly, as compared to those who meditate on an impersonal force which they cannot conceive of.

The characteristic features of a devotee described in the Geeta are indeed excellent. We should assimilate them in our lives. We have all assembled here to do Sadhana. So let us start inculcating these virtues right away.

Adveshta (Non-Hatred) : He who hates none. However, non-hatred does not mean not to punish those who are deserving of punishment. By all means punish them, not under the sway of hatred, but rather only out of a sense of duty. Hatred is one thing and discharging duty entirely another. Scriptural injunctions are duty-based, not motivated or borne out of hatred. The action proceeding out of a sense of duty is equivalent to inaction. It leaves no impression on the mind of the doer. This is why God, even though performing such great deeds, is still the non-doer.

Maitri (Friendly) : He who fosters friendship. He has friendly attitude towards all living creatures. He has love for all. He is friendly even towards those who are hostile. This eventually conquers their inimical attitude.

Karuna (Compassionate) : the anguish one feels on seeing the wretched and suffering is called compassion. The President of America on seeing a pig helplessly stuck and suffering in the mud had rescued it.

Nirmam (Free from attachment) : These words of Jesus that if someone asks for your coat, give him your shirt as well are indeed lofty and profound. Even after giving away the shirt one might be attached to it. Therefore, be non-attached, i.e., not having the idea of 'me and mine' even when the object is in one's possession.

Nirahankar : Free from egoism

Kshami : Forbearing

Sama-Dukh-Sukh (Equipoised) : being even-minded in happiness and sorrow.

Satat Santusht (Ever content) : 'यहाँ यूँ भी वाह वाह है, और यूँ भी वाह वाह'. This, however, does not mean not to put forth self-effort. One ought to endeavour, but be content in both success and failure and in all situations and under all circumstances.

Yogi : one who is steadily united with God.

Yatatma (Self-controlled) : one who has succeeded in restraining the senses.

Arpit Manobuddhi : one who has dedicated

his mind and intellect to God.

Dridha Nishchayi (Resolute) : one who has firm conviction – with regard to the reality of the Self.

These characteristics are mentioned in the twelfth chapter of the *Geeta*, verses 13 and 14. One ought to reflect upon them.

Sadhana Satsang Hoshiarpur
Date : 3.12.1951, Time : 11.00 am
Translation from Pujniya Swami Ji Maharaj, ***Pravachan Piyush****, pp. 213-4.*

महापुरुष समचित्त रहते हैं

प्रेम

हांसी में मुझे जाते देख कर, परम पूजनीय श्री महाराज जी ने कार खड़ी करवा कर मुझे भी बिठा लिया। महाराज जी के प्रेम से हृदय गद्‌गद्‌ हो गया। चार–पांच सौ नर –नारी गीता भवन में होंगे।

श्री महाराज जी ने श्री अमृतवाणी पाठ के बाद कहा,''कष्ट महान पुरुषों पर भी आया करते हैं–महाराज (स्वामी जी महाराज) कहा करते थे, तभी वे परखे जाते हैं– कई लोग कहते हैं कि तुम राम–नाम जपते हो और तुम्हें कष्ट भी आते हैं–तो क्या लाभ राम –नाम लेने का। हमारा विश्वास अभी कच्चा होता है और बाहर के कष्टों के कारण हम डोल जाते हैं– कष्ट तो अपने पुराने कर्मों के फल स्वरुप होते हैं। जिनका ईश्वर पर विश्वास पक्का होता है, वे डोलते नहीं, उन पर संकट का प्रभाव भी नहीं होता। वह ऐसे ही चला जाता है, जैसे पानी की लहर। माँ, बच्चे को कभी कभी उसके हित के लिए डाँटती है, हम थोड़ी सी पूंजी पा कर फूल जाते हैं और थोड़े कष्ट से घबरा जाते हैं। महापुरुष सम रहते हैं। हर कष्ट में ईश्वर कृपा छिपी होती है। दूसरों की निन्दा से घबराना नहीं चाहिए। जो कुआँ जैसा होता है, उसमें से वैसा ही पानी निकलता है। यदि अपने मन में पाप भरा हो तो बाहर की बात से हम तिलमिला उठते हैं। सज्जनों पर इसका कोई प्रभाव नहीं होता। हवा जब सुगन्धित फूलों से गुज़रती है तो उसमें सुगन्धि भर जाती है और जब गन्दगी से गुज़रती है तो उसमें बदबू आती है। अभिमान नहीं करना चाहिए। भगवान से कुछ मांगना नहीं चाहिए। केवल नाम की प्रीति माँगनी चाहिए। बड़ा वही है जो निस्वार्थ सेवक है यदि कोई दोषी आपके कहने पर बदलता नहीं–तो उससे घृणा नहीं करनी चाहिए। ये समझना चाहिए कि हममें त्रुटियाँ हैं जिनके कारण उन पर प्रभाव नहीं पड़ता। परमेश्वर सब में है–सबसे प्रेम से बरतना चाहिए–परमेश्वर तेरी कृपा सब पर हो और सब में नाम प्रीति हो।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी की डॉयरी से हांसी, गीता भवन 10-12-1972)

भक्त की परख

तार राम से जोड़े, ऐसा कोई संत मिले।
बाँह पकड़ न छोड़े, ऐसा कोई संत मिले।।

कुसुम्भी को मिल गए संत, हो गया उद्धार कुसुम्भी का। पाप छोड़ दिया, पिछला जीवन छोड़ दिया। अच्छाई को अपनाया जीवन में। अपना सुधार कर लिया, तो परमेश्वर ने उसका उद्धार कर दिया। जितने भी संत महात्मा हुए हैं, देवियो और सज्जनो, उनका पिछला जीवन कैसा भी रहा हो, राम–नाम की आराधना करते–करते, यदि उन्होंने अपने पिछले जीवन का त्याग कर दिया, तो उनका जीवन सफल हो गया। सार्थक हो गया उनका जीवन। रामानन्द के सुशिष्य ने कुसम्भी को इतना ही तो कहा :

"खाना पीना सोना है पशुओं का भी काम,
मानव में है एक गुण जपे राम का नाम।"

"तू किस गन्दगी में पड़ी हुई है कुसुम्भी, यौवन तो खराब हो गया, सारी जिन्दगी बरबाद न कर। लोक तो बिगड़ ही गया तेरा, परलोक भी न बिगाड़।"

संत के उपदेश ने बहुत चमत्कारी काम किया, कुसुम्भी का जीवन बदल गया। मानो मन ही मन शपथ ले ली, कि मैं इस गन्दगी से हर हालत में निकल कर रहूँगी... उसने निकल कर दिखाया। किसी एक युवक के साथ बसना शुरु कर दिया, सुगृहणी बन गई। सुन्दर पारिवारिक जीवन, सुन्दर गृहस्थ जीवन, सुधरा हुआ जीवन। पापी जीवन का त्याग कर दिया।

तुलसीदास का जीवन देखिए, महर्षि वाल्मीकि का जीवन देखिए, सूरदास जी का जीवन देखिए, अजामिल का जीवन देखिए। जिन्होंने भी परमेश्वर की बाँह पकड़ी उन्होंने अपने पिछले जीवन को छोड़ दिया। पिछले जीवन साथ नहीं रखे। मानो सारी की सारी बुराईयाँ राम–राम जपते तज दीं।

इस से ये ही स्पष्ट होता है न, आप राम–राम भी जपते रहो और बुराई भरा जीवन भी व्यतीत करते रहो, तो वहीं के वहीं रहोगे जहाँ से चले थे। कहीं साधना में प्रगति नहीं हो पाएगी। आप कहें कि हम राम–राम भी जपते रहें, खूब जाप भी करें, अमृतवाणी का पाठ भी करें, और दिन भर बेईमानी भी करें, हेरा–फेरी भी करें, भ्रष्टाचार भी करें, मिलावट इत्यादि भी करें और इससे राम–नाम से हमें लाभ हो जाएगा, शान्ति मिल जाएगी, परम शान्ति मिल जाएगी, हमारा जीवन सार्थक एवं सफल हो जाएगा। शास्त्र तो इस बात से सहमत नहीं है। ऐसा नहीं होता। आपको वह भद्दा जीवन, अभद्र जीवन छोड़ना ही होगा तो ही कल्याण हो पाएगा।

संत–महात्मा समझाते हैं, साधक प्रायः तीन प्रकार के होते हैं। एक तो पत्थर जैसे, पत्थर जब तक पानी में रहता है तब तक गीला रहता है। पानी ठण्डा होता है तो पत्थर भी

तब तक ठण्डा रहता है। बाहर निकलते ही पानी भी सूख जाता है और पत्थर की ठण्डक भी धीरे–धीरे कम होती जाती है। बाहर के temperature जैसा हो जाता है। ऐसे साधक जो इधर से सुनते है, उधर से निकाल देंगे यहाँ बैठे–बैठे बहुत सिर हिलाएँगे। यहाँ बैठे सत्संगी बाहर निकलते ही pure संसारी हो जाएँगे। ऐसे साधक इसी पत्थर की तरह हैं। कोई लाभ नहीं होता। वे अपने जीवन में बदलाव लाना ही नहीं चाहते। यदि जीवन में बदलाव लाना ही नहीं चाहते, तो परमात्मा क्या करे? कैसे सहायता करे उनकी? संत भी मिले, शास्त्र ने भी समझाया, संत ने भी उपदेश दिया, परमात्मा की कृपा का पात्र भी बनाया। उसके बावजूद भी ऐसे साधक अपने जीवन में कोई बदलाव नहीं ला पाए।

जो साधक परमेश्वर के दरबार में प्रार्थना करते हैं यदि उनका सम्पर्क सीधा परमात्मा से हो चुका हुआ हो तो उन्हें अनुभव होता होगा, कभी आप प्रार्थना के लिए बैठे हैं, किसी अमुक व्यक्ति के लिए प्रार्थना कर रहे हैं परमात्मा उसे इस मोह रुपी दलदल से, इस मोह माया के जाल से छुड़वाईए। बल दीजिए कि वह छोड़ सके। तुरन्त भीतर से आवाज़ आती है, मैं तेरे चाहने पर कितना करुँ? क्या वह भी चाहता है कि ऐसा हो? वह सहयोग नहीं दे रहा, वह साथ नहीं दे रहा तो मैं क्या करुँ? मैं उसे धक्का मार कर ऊपर चढ़ाता हूँ, वह छलांग मार कर नीचे गिर पड़ता है। क्या करुँ? ऐसे आदमियों के लिए परमात्मा कई बार रोक भी देते हैं, बस करो, ऐसे आदमियों के लिए प्रार्थना न करो। कोई और बात करो। ऐसे शब्द परमेश्वर की ओर से आते हैं। कोई ये कहे कि business बिना झूठ बोले, बिना बेईमानी के, बिना हेरा–फेरी के, बिना रिश्वत दिए लिए, ये सब सिलसिले चलते नहीं हैं। परमेश्वर ऐसों को अच्छे businessman तो कहता है लेकिन अच्छे साधक नहीं कहता। He is very sure कि ये अच्छे businessman तो बन जाएँगे, लेकिन कभी अच्छे साधक नहीं बन सकेंगे। कभी मेरे काम के नहीं बन सकेंगे। अपने काम के लिए ठीक हैं, संसार के लिए ठीक हैं, अपने परिवार के लिए ठीक हैं पर जैसे मुझे चाहिए वैसे कभी नहीं बन पाएँगे। पहले साधक पत्थर की तरह।

दूसरे साधक कपड़े की तरह। जल में भिगोते हैं गीले हो जाते हैं। सत्संगति में बैठते हैं बिल्कुल शीतल शान्त, सत्संग का बहुत देर तक असर रहता है, घर तक असर रहता है दिन भर असर रहता है। घर जाकर जाप–पाठ करते हैं ध्यान में बैठते हैं अच्छा जीवन यापन करते हैं और अगले दिन की फिर तैयारी करते हैं। लेकिन फिर sign of interrogation समय मिलने पर वही गुरुमुख व्यक्ति उनको मन मुख होने पर देर नहीं लगती। जैसे, एक जगह पर संत महात्मा उपदेश दे रहे थे। एक बिल्ली पास बैठी हुई थी, बहुत एकाग्रचित्त हो कर बिल्ली संत की बात सुन रही थी। निश्चल, कई दिन व्यतीत हो गए। इतनी एकाग्रचित्त हो कर वह सुना करती। संत महात्मा ने उसके मस्तक पर दीपक रखना शुरु कर दिया लाईट के लिए। आज सामने चूहा दिखाई दिया, भागी और झपटी उसके ऊपर। ऐसे साधक कपड़े जैसे–भीगे कपड़े जैसे।

तीसरे साधक, मिटटी के ढेले जैसे। नमक का

ढेला कहो, चीनी का ढेला कहो। मिट्टी का ढेला कहो। सरिता में प्रवेश करके फिर बाहर नहीं निकलते। परमात्मा ऐसे साधक को ही चाहता है। जानता है वह लाखों करोड़ों में कोई एक होगा ऐसा। जो एक बार सरिता में प्रवेश करके फिर बाहर नहीं निकला और वह सरिता उसे सागर तक ले कर जाती है। परमेश्वर ऐसे साधकों की भूरि–भूरि प्रशंसा करता है। वह कहता है कि जैसे संसारी, सांसारिक वस्तुओं का लोभी, मैं ऐसे संतों का लोभी, ऐसे सज्जनों का लोभी। मेरा मन नहीं भरता। मेरा भीतर नहीं भरता, मेरा मन करता है और, और, और, और, और।

कुसुम्भी को मिल गए संत। कुसुम्भी ने अपना जीवन सुधार लिया। सार्थक बना लिया। सफल हो गया कुसुम्भी का जीवन। यही स्पष्ट हुआ न कि एक दफा दृढ़ निश्चय कर लिया कि उस नारकीय जीवन में मैं पुनः प्रवेश नहीं करुँगी। नहीं किया। परमात्मा यही देखता है। आपने यदि कहा है कि मैं उस जीवन में प्रवेश नहीं करुँगी, यदि आप पक्के हो तो परमात्मा आपकी बाँह पकड़ कर सदा और सदा के लिए अपने साथ ही ले जाएगा और ऐसी जगह ले जाएगा जहाँ से फिर आपको उस जीवन को, जो आप छोड़ चुके हो, वह कभी वहाँ प्रवेश नहीं करने देगा, बशर्ते कि आप उस जीवन (जीवन–मरण वाला जीवन) में न प्रवेश करें। आपने त्याग कर दिया है, आप पक्के तो परमात्मा आपसे कहीं अधिक पक्का है।

(परम पूजनीय श्री महाराज जी का प्रवचन 2-2-2011) ■

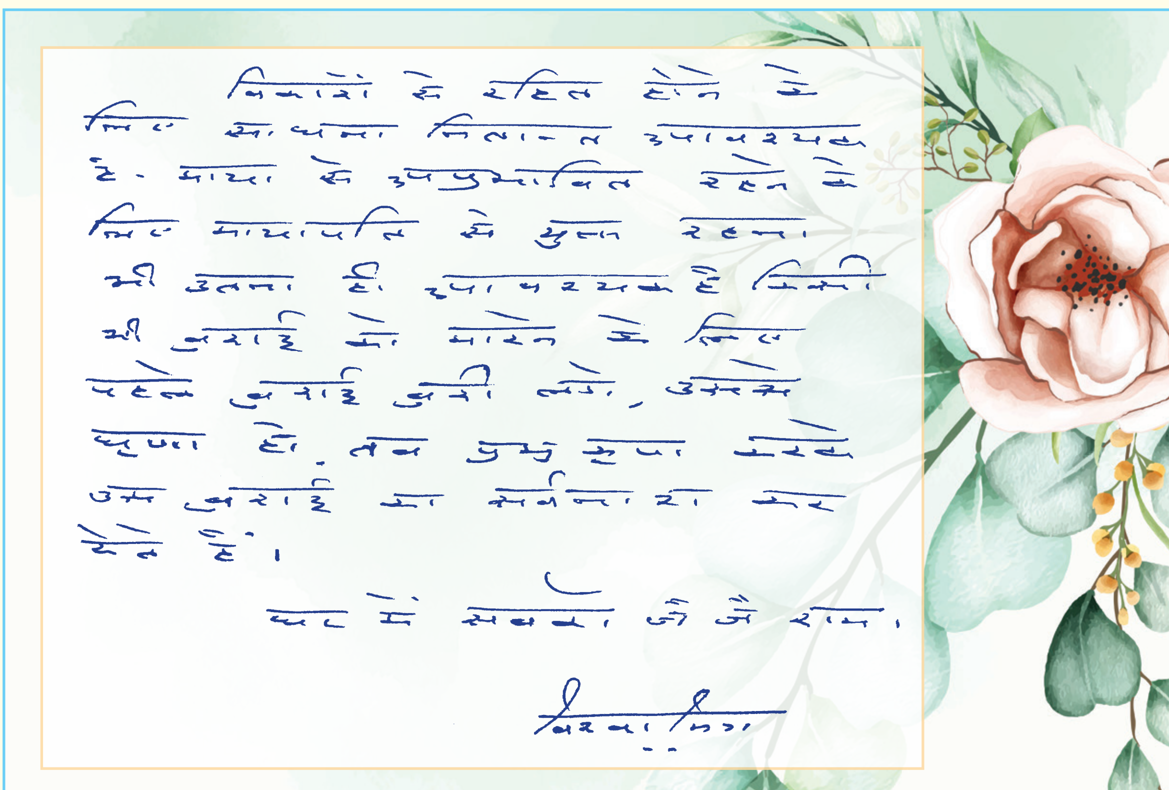

विकारों से रहित होने के लिए साधना नितान्त आवश्यक है। माया से अप्रभावित रहने के लिए मायापति से युक्त रहना भी उतना ही आवश्यक है जितनी भी बुराई को मारने के लिए पहले बुराई करनी छोड़े, उसमें घृणा हो, तब प्रभु कृपा करके उस बुराई का निर्मूलन कर देते हैं।

घट में सबके जी जै राम।

श्रीरामशरणम् - सिरसा : एक ऐतिहासिक विवरण

('श्रीरामशरणम् : एक ऐतिहासिक विवरण' के अन्तर्गत लेखों की अगली कड़ी)

भ्रम भूल में भटकते उदय हुए जब भाग,
मिला अचानक गुरु मुझे लगी लगन की जाग।

सिरसा हरियाणा में एक शहर है जो राजस्थान व पंजाब दोनों के बार्डर के समीप है। परम पूजनीय गुरुजनों की कृपा से परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज जी 1970 को हिसार के एक वरिष्ठ साधक के निवास स्थान पर पधारे। इसके उपरांत परम पूजनीय महाराज जी के सानिध्य में ही एक वरिष्ठ साधक के निवास स्थान पर 1970 से श्री अमृतवाणी का संकीर्तन (दैनिक व साप्ताहिक) आरम्भ हो गया। साधकों ने श्री महाराज जी से विनती की कि सत्संग तो शुरु हो गया, पर साधक अधिक नहीं आते। परम पूजनीय श्री महाराज ने उत्तर दिया, ''सत्संग नियत समय पर आरम्भ हो और नियत समय पर पूर्ण हो। आपने पीछे मुड़ कर नहीं देखना, समय आयेगा, जगह छोटी पड़ जाएगी।''

''नानक दास मुख से जो बोले,
ईहाँ उहाँ सच्च होवे''

ऐसा ही हुआ। पहले बैठक में सत्संग होता था, फिर ऊपर हाल में आरम्भ किया और कुछ समय पश्चात् बरामदा भी बीच में मिला लिया गया।

कुछ समय के बाद जब पूजनीय महाराज जी से श्रीरामशरणम् निर्माण हेतु आज्ञा माँगी तो उन्होंने इन्कार कर दिया। इस पर उनसे प्रार्थना की गई कि किसी से भी चंदा आदि एकत्रित नहीं किया जाएगा और सामर्थ्य के अनुसार, धीरे–धीरे श्रीरामशरणम् का निर्माण किया जायेगा। इस पर श्री महाराज जी ने अपनी अनुमति प्रदान कर दी।

इस प्रकार श्रीरामशरणम् भव्य नव–निर्मित भवन, मुख्य डाकघर के सामने बन कर तैयार हुआ। सब कुछ गुरुदेव के निर्देश के अनुसार ही हुआ। उद्घाटन के लिए 2 मार्च 1987 का दिन निश्चित किया गया। कार्यक्रम की रुपरेखा तय कर के पूज्य श्री महाराज जी से अनुमति ली गई व सबको निमन्त्रण दिया गया। इस कार्यक्रम के लिए दूर–दूर से साधकवृंद आकर सम्मिलित हुए।

पूज्य श्री महाराज जी ने सत्संग हॉल का उद्घाटन किया, फीता काट कर सबके साथ प्रवेश किया। उसके बाद श्री अमृतवाणी का पाठ व भजन कीर्तन हुआ।

सच्चे संत के संग से चढ़े भक्ति का रंग,
नित्य सवाया वह बढ़े कभी न होवे भंग।।

साधकों की संख्या बढ़ती गई और भवन छोटा पड़ने लगा। इसके उपरांत पूजनीय श्री डॉ. विश्वामित्र जी महाराज अपने राजस्थान के दौरे के दौरान सिरसा पधारे, तो उन्हें इस बात से अवगत कराया गया। श्रीरामशरणम् भवन के साथ ही एक साधक का गोदाम था तो उन्होंने बहुत आग्रहपूर्वक परम पूजनीय श्री महाराज जी से विनय की कि यदि वे आज्ञा दें तो उसको इस शुभ कार्य के लिए लगा लें। उनकी भावना देखते हुए परम पूजनीय श्री महाराज जी ने सहर्श स्वीकार कर अनुमति दे दी।

गुरुदेव के दौरे के पश्चात् श्रीरामशरणम् के भवन के विस्तार का कार्य आरम्भ हुआ। गुरुजनों की अनुकम्पा से विस्तृत परिसर तैयार हो गया। परम पूजनीय श्री महाराज जी की अनुमति से 20 दिसम्बर 2002 की तिथि उद्घाटन के लिए निश्चित कर ली गई।

उद्घाटन से कुछ दिन पूर्व अखंड जाप शुरु कर दिया गया था, जिसकी पूर्णाहुति प्रातः 7 से 7:15 तक हुई। इसके पश्चात् हवन सम्पन्न हुआ।

पूज्य श्री महाराज जी ने विस्तृत सत्संग हॉल का विधिवत् उद्घाटन किया। इसके पश्चात् श्री अमृतवाणी का पाठ, श्री महाराज जी का प्रवचन और भजन–कीर्तन हुआ। भंडारा प्रसाद का कार्यक्रम हुआ। हरियाणा, पंजाब, दिल्ली व राजस्थान के अनेक साधकगण इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

श्रीरामशरणम् भवन सिरसा शहर के बीचो–बीच अलंकृत है। दैनिक व साप्ताहिक सत्संग के अतिरिक्त अखण्ड जाप, श्रीमद्भगवद्गीता जी व श्री रामायण जी के अखण्ड पाठ समय –समय पर होते हैं। गुरुजनों की अनुकम्पा का प्रतीक, यह साधकों के लिए अपार शान्ति, भक्ति व आनन्द का दिव्य स्थान है। ■

अद्वेष्टा सर्वभूतानां मैत्रः करुण एव च ।
निर्ममो निरहंकारः सम दुःख सुखः क्षमी ॥१३॥

जो जन सब प्राणियों के प्रति द्वेष रहित है, सब का मित्र है,
दयावान है, ममता रहित है, अहंकार वर्जित है, सुख दुःख
में सम है, क्षमावान् है ॥१३॥

सन्तुष्टः सततं योगी यतात्मा दृढ़निश्चयः ।
मय्यर्पित मनो बुद्धिर्यो मद्भक्तः स मे प्रियः ॥१४॥

सदा सन्तुष्ट है, योगयुक्त है, आत्म संयमी है, भगवान्
में दृढ़ निश्चय वाला है और मुझ में मन तथा बुद्धि अर्पण
किये हुए है ऐसा मेरा भक्त मुझे प्यारा है ॥१४॥

(परम पूजनीय श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज की हस्त लिखित श्रीमद्भगवद्गीता में से 12 अध्याय के 13 और 14 श्लोक)

अनुभूतियाँ

गुरुदेव का मौन आशीर्वाद

नवम्बर 1956 में स्वामी जी महाराज जब हाँसी का साधना सत्संग समाप्त करके लुधियाना जाते हुए थोड़े समय के लिए हिसार ठहरे हुए थे, तो मैं अपनी लड़की को, जो कि दर्शन करने की अभिलाषिनी थी, ले गया। लड़की की टाँग में दो साल से तकलीफ थी। जिसका इलाज तो चल रहा था, परन्तु मैं और बच्ची दोनों श्री स्वामी जी महाराज के आशीर्वाद के लिए उत्सुक थे। लड़की बड़ी मुश्किल से जिस स्थान पर श्री स्वामी जी महाराज ठहरे थे, सीढ़ियाँ चढ़ी और हम दोनों ने उनके चरणों में मस्तक नवाए। उनके आगे दो अखबार पड़े थे, और वे उनको जल्दी –जल्दी देख रहे थे। मैंने विनय की कि इस बच्ची को आशीर्वाद देने की कृपा करें। श्री स्वामी जी महाराज ने फरमाया, ''भाई ! यह तो डाक्टरों का काम है न।'' मैंने कहा, ''वह तो चल रहा है, आपके आशीर्वाद की आवश्यकता है।'' श्री स्वामी जी महाराज कुछ नहीं बोले और अखबार देखने में लगे रहे। जब श्री स्वामी जी महाराज ने और कोई बात नहीं की तो थोड़ी देर बाद हम दोनों नमस्कार करके वापिस चले आए। रास्ते में लड़की कुछ निराश हो कर कहने लगी, ''पिता जी ! हमें तो उन्होंने देखा भी नहीं।'' उदास तो थोड़ा मैं भी था। मैंने कहा, ''बेटा!

महात्माओं के दर्शन से ही बड़ा लाभ होता है।''

अप्रैल 1957 में बच्ची का ऑपरेशन हुआ दो तीन माह में वह ठीक होकर अपने ससुराल चली गयी। जब नवम्बर 1957 में हाँसी साधना सत्संग पर पहुँचा और स्वामी जी के चरणों में मस्तक रख कर ऊपर उठाया तो पूछने लगे, ''आपकी लड़की का क्या हाल है।'' मैंने उत्तर दिया, ''आपके आशीर्वाद से वह बिल्कुल ठीक है और अपने ससुराल चली गई है।

जब बाद में मैंने यह बात लड़की को लिखी कि आप तो समझती थी कि उन्होंने ध्यान नहीं दिया मगर उनको याद रहा और एक वर्ष बाद सबसे पहले आपका हाल पूछा तो वह बहुत खुश हुई। तब हम दोनों को अनुभव हुआ कि उनका मौन आशीर्वाद हमें उसी समय प्राप्त हो गया था। (*सत्य साहित्य* अगस्त, 1961)

He Bestows His Kind Grace

I reached Haridwar on the auspicious occasion of a Sadhna Satsang in honour of Pujyashree Prem ji Maharaj Ji's Nirvan Divas. We were about 7 ladies in that room. I put my bedding next to a foreigner who addressed herself as 'Mother' and was accompanied by a young girl around 16 years of age. I introduced myself to both of them and found out that both had come from a village in North India. Mother was actually from Europe and was running a school for underprivileged girls. She had met Pujyashree Vishwa Mitter Ji Maharajshree and had wanted Him to initiate her with Ram Naam. Her student too had been initiated. This young girl told me about her emotional pain after her own family had abandoned her and she was now living in the shelter with 'Mother'.

We all got well acquainted with each other and it was a joy to see them both enjoying the Sadhna Satsang. On the last day in the last sitting of that evening, Maharajshree blessed the young girl with sublime divine experience which she shared with me before she departed the next day. She also asked me to tell Maharajshree about her experience.

When she was in that last sitting she had closed her eyes listening to the Bhajans. Then she saw Maharajshree coming out of Shree Adhishthanji and Ram Naam was continuously flowing out of His body. She was so overwhelmed that she let out many screams. She felt she had experienced the Param Kripa Swarup of Parmeshwar Himself. She was so overwhelmed, yet so overjoyed with ecstasy. She had told me that her life had changed with the blessings of Maharajshree. Gurudev used to say : ''सोचने की बात तो यह है कि इस जन्म में आपकी वास्तविक यात्रा कितनी हुई है।''

In the end what really matters is how many steps we are able to take towards our spiritual progress in one lifetime. If we are persistent in holding on to His Name with *shraddha* He lavishly bestows His Kind Grace upon us! ■

गुरुदेव का संकल्प

परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज का व्यक्तित्व अति ही आकर्षक था, उनकी आँखें तो मानो प्रेम का समुद्र ही थीं। उनकी आँखों से सदा कृपा बरसती थी। कोई भी व्यक्ति उनसे मिल कर अति प्रभावित होता था। उनके ऑफिस में काम करने वाले, जो भी उनके सम्पर्क में आते थे वे उनके प्रति आकर्षित हुए बिना नहीं रह पाते थे।

एक बार मेरे साथ काम करने वाली एक लड़की ने बताया कि उसे पेट में बहुत ही तकलीफ है, और उससे कुछ भी नहीं खाया जा रहा था। क्योंकि परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज होमियोपैथी की दवाई दिया करते थे, इसलिए मैंने उसे कहा कि अगर वह चाहे तो मैं उसे दवाई दिलवा कर ला सकती हूँ। मैं उसे परम पूजनीय श्री प्रेम जी महाराज के पास ले गई। श्री महाराज जी को उस लड़की ने अपनी तकलीफ बताई तो श्री महाराज जी ने मुझे कहा कि तुम इसकी थोड़ी मालिश कर दो। पहले तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ परन्तु उन्होंने कहा था इसलिए मैंने उसे अगले दिन प्रातः 11 बजे अपने पास आने को कहा। जब वह आई तो मैंने उसकी मालिश कर दी और कहा कि दोपहर 3 बजे फिर आ जाए। उसने श्री महाराज की कृपा का अनुभव किया था और उसे थोड़ा आराम भी आ गया था। इसलिए इतनी भीषण गर्मी में भी वह लड़की दुबारा आई। मैंने उसकी फिर से मालिश कर दी। वह अब बिलकुल ठीक महसूस करने लगी। यह परम पूज्य गुरुदेव का संकल्प था कि उसको पूर्णतया आराम आ गया। गुरुदेव का आशीर्वाद था। ■

श्रद्धा सुमन

कॅरोना वॉयरस महामारी का प्रकोप पूरे विश्व में व्याप्त है जिसके कारण लाखों प्राणी काल के गाल में समा गए हैं। ऐसा कोई परिवार दिखाई नहीं देता जो इससे अछूता रहा हो। श्रीरामशरणम् परिवार ने भी इस महामारी के कारण अपने कई सदस्यों को खोया है। स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, श्रीरामशरणम् परिवार की ओर से उन सभी दिवंगत आत्माओं को श्रद्धा–सुमन अर्पित करता है। वह सभी साधक हमारे परिवार के बहुत प्यारे सदस्य थे। उनकी मधुर स्मृति हमारे मानस–पटल पर हमेशा अंकित रहेगी। परमात्मा उन दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करें व गुरुजनों के चरणों में वास दें।

अभी भी हमारे परिवार के कई सदस्य इस बीमारी से जूझ रहे हैं, जिनके पूर्ण स्वास्थ्य लाभ के लिए गुरुजनों की कृपा से श्री अमृतवाणी पाठ व राम–नाम जाप हो रहे हैं। उस देवाधिदेव से उनके पूर्ण रुपेण सुस्वास्थ्य की मंगल कामना करते हैं।

निवेदक : स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट

विभिन्न केन्द्रों पर सम्पन्न कार्यक्रम

सितम्बर से दिसम्बर 2018

Programmes held between 2 October – 9 December 2020.

With the Grace of Pujniya Gurujans, Satsangs have been held according to schedule. They have been enthusiastically attended by sadhaks. Broadcast has been through Shree Ram Sharnam's official Face book and Youtube channel. Daily average attendance has been above 4428 and Sunday Satsangs approximately 6452. Programmes have been attended by sadhaks in India and overseas.

Details about special programmes are given below:

- The Birth Centenary Celebrations of Param Pujniya Prem Ji Maharaj on 2 October were attended by approximately 11,200 sadhaks via both Facebook and Youtube Channels.
- Vijay Dashmi (Dushera) Satsang on 25 October was attended by approximately 45,000 sadhaks via Youtube channel & Facebook.
- Nirvan Diwas of Param Pujniya Swami Ji Maharaj Satsang on 13 November was attended by 12,566 sadhaks on Facebook and on Youtube.
- 61 Tilak Diwas Satsang of Param Pujyaniya Prem Ji Maharaj, on 29 November was attended by approx. 16,000 sadhaks.
- Tilak Diwas of Param Pujyaniya Maharaj Ji on 9 December was attended by 2,232 sadhaks on Youtube and 3,552 on Facebook Page

Satsang information and online links to join the Satsangs are regularly shared on Shree Ram Sharnam's official Youtube and Facebook channels.

मुझे भरोसा राम का,
रहे सदा सब काल।
दीनबंधु वह देव है,
सुखकर दीन दयाल।।

जाप व श्री अमृतवाणी पाठ

कॅरोना वॉयरस महामारी को मूल से हटाने के लिए देश विदेश के साधक परम प्रभु देवाधिदेव करुणा सागर, दयालु, कृपालु परमेश्वर के दरबार में प्रार्थना के रुप में श्री अमृतवाणी के पाठ और नाम–जाप कर रहे हैं। ये जाप व पाठ लॉक–डाऊन लगने के तुरन्त बाद से शुरु किए गए। केन्द्रों से लगातार जाप व पाठ की गिनती की सूचना आ रही है।

13 दिसम्बर 2020 तक कुल जाप की संख्या 145,32,31,000 (एक अरब पैंतालीस करोड़ बतीस लाख और इकतीस हज़ार) और श्री अमृतवाणी पाठ की संख्या 19,83,647 (उन्नीस लाख तिरासी हज़ार छः सौ सैंतालीस) हो गई है। यह पाठ और जाप अभी भी चल रहे हैं। जो साधक इसमें अपना योगदान देना चाहते हैं, कृपया वे जाप व श्री अमृतवाणी पाठ की गिनती अपने स्थानीय प्रबन्धक के माध्यम से श्रीरामशरणम् दिल्ली भेज सकते हैं। ■

Sadhna Satsang in Year 2021*

Indore	15 to 18 January	Friday to Monday
Hansi	5 to 8 Feburary	Friday to Monday
Haridwar	13 to 16 March	Saturday to Tuesday
Haridwar	23 to 28 April	Friday to Wednesday
Haridwar	30 June to 3rd July	Wednesday to Saturday
Haridwar (Vyas Purnima)	19 to 24 July	Monday to Saturday
Haridwar (Ramayani)	6 to 15 October	Wednesday to Friday
Haridwar	11 to 14 November	Thursday to Sunday
Gwalior	26 to 29 November	Friday to Monday

Open Satsang in Year 2021*

Jhabua	10 to 12 January	Sunday to Tuesday
Delhi (Holi)	27 to 29 March	Saturday to Monday

Satsangs will depend upon the evolving COVID-19 situation. Dates of other Open Satsangs will be announced later once they are finalized.

Purnima 2021

January	28	Thursday
February	27	Saturday
March	28	Sunday
April	27	Tuesday
May	26	Wednesday
June	24	Thursday
July	24	Saturday
August	22	Sunday
September	20	Monday
October	20	Wednesday
November	19	Friday
December	19	Sunday

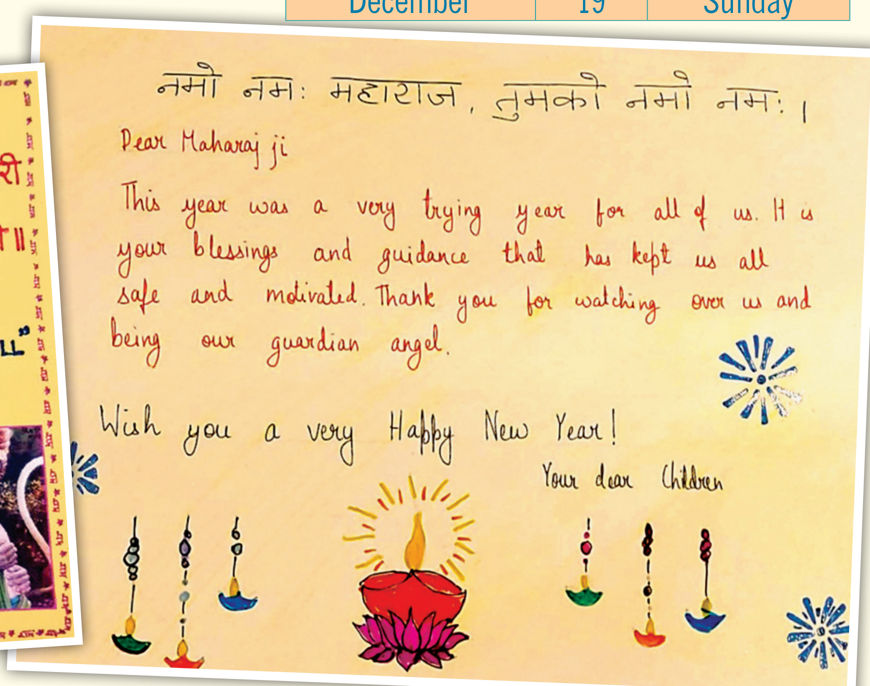

(विभिन्न केन्द्रों से बच्चों द्वारा गुरुजनों को नववर्ष पर श्रद्धा सुमन)

These colorings have come from children across India and overseas in response to the call given in *Satya Sahitya* of July 2020. Thanks to all the children who participated.

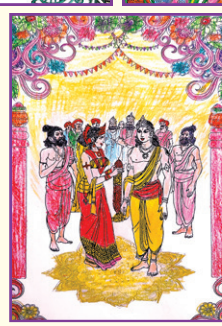
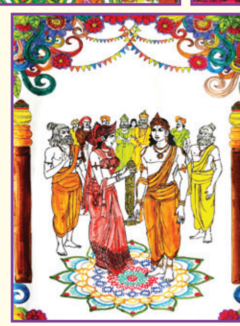
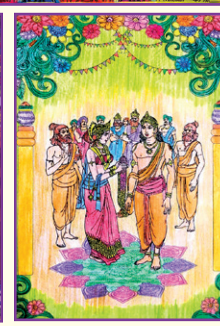

यदि आप 'सत्य साहित्य' की इस प्रति को नहीं रखना चाहते,
तो कृपया इसे अपने स्थानीय केन्द्र या निकटतम श्रीरामशरणम् को लौटा दें।

प्रकाशक मुद्रक श्री अनिल दीवान द्वारा श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, 8 ए रिंग रोड, लाजपत नगर–IV नई दिल्ली. 110024 से प्रकाशित एवं रेव स्कैनस प्राइवेट लिमिटेड, 216, सेक्टर - 4, आई.एम.टी. मानेसर, गुरुग्राम, हरियाणा-122051 से मुद्रित। संपादकः मेधा मलिक कुदेसिया एवम् मालविका राय

Publisher and printer Shri Anil Dewan for Shree Swami Satyanand Dharmarth Trust, 8-A Ring Road, Lajpat Nagar IV, New Delhi 110024 and printed at Rave Scans Private Limited, 216, Sector-4, IMT Manesar, Gurugram, Haryana-122051. Editors: Medha Malik Kudaisya and Malvika Rai.

©श्री स्वामी सत्यानन्द धर्मार्थ ट्रस्ट, नई दिल्ली

ईमेल: shreeramsharnam@hotmail.com
वेबसाईट: www.shreeramsharnam.org

RNI No. DELBIL/2017/72924